चतुर्थ अध्याय

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का तुलनात्मक-पक्ष

चतुर्थ अध्याय

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का तुलनात्मक-पक्ष

4.0 विषय वस्तु :

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इन उपन्यासों की अपनी अलग-अलग विशिष्टतायें है । इन उपन्यासों में चित्रित परिवेश, पात्रों की परिस्थिति, संवाद एवं उभरने वाले बोधों की अभिव्यक्तियों में भिन्नता होते हुए भी काफी समानतायें हैं । प्रबंध के इस अध्याय में इन उपन्यासों के समानताओं और भिन्नताओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है ।

4.1 वैचारिक-पक्ष के धरातल पर मेहरून्निसा परवेज और नासिरा शर्मा के उपन्यास

वैचारिक-पक्ष किसी भी उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पक्ष होता है । उपन्यासों की यह आत्मा है । इसके बिना उपन्यास की कल्पना संभव नहीं है । उपन्यासों की चर्चा, उसकी सफलता, सबलता एवं श्रेष्ठता उसके विचार-पक्ष पर ही निर्भर करती है । इसके कारण उपन्यासों में प्रखरता आती है, उसके तेवर उभरते हैं । उपन्यासों के अस्तित्व एवं श्रेष्ठता के लिए वैचारिक-पक्ष अनिवार्य है । जिस तरह नमकहीन भोजन रूचिकर नहीं रह जाता, उसी तरह विचारहीन उपन्यास अति सामान्य बन जाते हैं ।

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों में मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा के उपन्यासों में वैचारिक प्रतिबद्धता का

परिचय मिलता है । वैचारिक-पक्ष के कारण ही इन उपन्यासकारों के उपन्यास कमोबेश समान रुप से प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं । इन उपन्यासों के अध्ययन से पता लगता है कि दोनों रचनाकारों के उपन्यासों के वैचारिक पक्षों में काफी समानतायें हैं । दोनों रचनाकारों के उपन्यासों में आदर्शवादी, यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक, सुधारवादी, नारी जीवन एवं नारी संबंधित विचार आदि का समावेश है ।

मेहरुन्निसा परवेज का प्रथम उपन्यास **'आँखों की दहलीज'** का प्रधान विषय स्त्री-पुरुष संबंध और मातृत्व है । कथानक में जहाँ एक ओर पात्र तालिया माँ नहीं बनने के कारण कुंठित हो रही है, वहीं उसकी सोच परम्परावादी है, दूसरी ओर तालिया की माँ द्वारा तालिया के विवाहित होने पर भी उसे किसी अन्य पुरुष जावेद के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना अति यथार्थवादी विचार है । जावेद विवाहित होते हुए भी तालिया से संबंध बनाता है । वह एक व्यापारी है एवं एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है । वह समय आने पर तालिया के साथ अपने संबंध से साफ इनकार कर देता है । यह उसकी भोगवादी प्रवृति को दर्शाता है । यह समाज के कथित भद्र जनों के कलई खुलने का विचार है । तालिया का पति शमीम संयमी, सीधा, सरल एवं सुलझे विचारों वाला एक उदार व्यक्ति हैं । वह सब कुछ जानते हुए भी तालिया से बेपनाह प्यार करता है । उपन्यास की एक पात्रा जमीला किसी से प्यार करती है, किन्तु अपने पारिवारिक दायित्व के निर्वहन के कारण उससे शादी नहीं कर पाती है । इस तरह की घटनायें आदर्शवादी विचारों को दर्शाते हैं । उपन्यास के अंत में तालिया का आत्म ग्लानि महसूस करना एवं धोखे से अपनी सहेली जमीला का शमीम के साथ शारीरिक संबंध बनवाकर स्वयं घर से निकल जाना, काल्पनिक एवं पलायनवादी विचारों को प्रदर्शित करता है ।

'उसका घर' उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने यौन शोषण के विकृत रुप, संयुक्त परिवार का विघटन एवं नारी की मनोदशा को केन्द्रीय विषय बनाकर विभिन्न वैचारिक पक्षों को उजागर किया है । उपन्यास के मुख्य पात्र ऐलमा को उसके पति द्वारा तलाक देना, उसके अपने भैया द्वारा उसका यौन शोषण करवाकर लाभ लेना, आहूजा द्वारा ऐलमा का तिरस्कृत होना आदि घटनायें उच्च तथा मध्य वर्ग के कुत्सित प्रवृतियों को दर्शाता है । उपन्यास की अन्य पात्र सोफिया जिसका बचपन गरीबी और अभावों में बीता है, हमेशा पुरूषों के घिनौने रूप को ही देखा है । इन सभी घटनाओं में नारी जीवन एवं नारी समस्याओं से संबंधित विचारधारा प्रदर्शित है । पात्र रेशमा का देव से प्यार करना और विवाह के बंधन में बंध जाना जैसी घटनायें परम्परा तोड़ने वाला विचार हैं । ऐलमा का मद्रास जाकर नौकरी करने का निर्णय लेना नारी स्वाबलंबन एवं उसके स्वतंत्र अस्तित्व का विचार है ।

'कोरजा' उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने बस्तर क्षेत्र के निम्न मध्यम वर्गीय ग्रामीण मुस्लिम परिवारों की आर्थिक जटिलता एवं जिन्दगी की कड़वाहट की सच्चाई को केन्द्रीय विषय बनाया है । उपन्यास की पात्रा रब्बो का सौन्दर्य और गरीबी उसकी मजबूरी है । अपने सपनों का गला घोंट कर वह हालातों से समझौता करती है । यह उसके यथार्थवादी विचारों को दर्शाता है । पात्रा कम्मों लोगों को जिन्दगी से जूझने और धैर्य रखने की सीख देती है, किन्तु स्वयं आत्म हत्या कर लेती है । यह पलायनवादी विचारों को दर्शाता है । पात्रा मोना विषमताओं के बावजूद भी सर्जनात्मक कामों में लग जाती है । उपन्यास की पात्रा नानी बेसहारा लोगों को सहारा देती है - जैसी घटनायें जीवन के संघर्ष एवं उसके उच्च मूल्यों को बनाए रखने के विचार हैं ।

'अकेला पलाश' उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने काम-काजी नारी एवं बेमेल विवाहों की समस्याओं को उजागर किया है । तहमीना इसकी मुख्य पात्रा है । तहमीना का पति उसके पिता की उम्र का है । दोनों में सामंजस्य का अभाव है । फिर भी वह दिग्भ्रमित नहीं होती है । वह सामाजिक कार्यों से जुड़ जाती है, यह नारी स्वाभिमान एवं स्वावलंबन के विचारों को प्रदर्शित करता है । तहमीना के चेयरमैन बनने के बाद एस॰पी॰ तुषार उसके करीब आ जाता है । दोनों के बीच प्रगाढ़ संबंध भी स्थापित हो जाते है । किन्तु समय आने पर तुषार अपनी मान-मर्यादा एवं जिम्मेदारियों का वास्ता देकर सारे संबंध तोड़ लेता है । पात्र विमला का आश्रमों द्वारा यौन शोषण एवं स्वामीजी के साथ शिष्या बनकर रहना - जैसी घटनायें सफेदपोशों के भोगवादी प्रवृति के विचार हैं । तहमीना का मुँहबोला भाई विपुल जो पढ़ा लिखा, होनहार एवं संघर्षशील युवक है । नौकरी मिलने के बाद वह दो बच्चों की माँ तरू से शादी कर आदर्शवादी विचारों को प्रस्तुत करता है ।

'समरांगण' उपन्यास का मुख्य पात्र पं॰ गोपीलाल जब नर्मदा के किनारे पहली बार पहुँचता है तो वह नर्मदा स्नान को बेचैन हो जाता है । यह परम्परावादी विचार है । नौटंकीबाई बूँदाजान के सौन्दर्य को देख उसका सम्मोहित हो जाना उसके सौन्दर्यवादी विचारों को व्यक्त करता है । मिट्ठू सिंहजी द्वारा गोपीलाल को आश्रय देना, उसे रोजगार दिलाने में मदद करना एवं अपनी कोठी उसके नाम कर देना - जैसी घटनाओं में आदर्शवादी विचारों का समावेश है । गोपीलाल द्वारा अपने बेटे को आधुनिक शिक्षा दिलवाना उसके प्रगतिशील विचारों का द्योतक है । पृथा देवी के भाई को कालेपानी की सजा, डॉ॰ अहमद को उनके देश प्रेम के कारण गोली मार देना जैसी घटनाओं में राजनीतिक एवं स्वाधीनता विषयक विचार है ।

'पासंग' उपन्यास की पात्रा 'कनी' की दादी के विचार एवं व्यवहार यथार्थवादी है । उन्हें जीवन की गहरी समझ है । पात्रा 'बानोआपा' के साथ उसके अपने परिवार के लोगों द्वारा ही किए गए व्यवहार जैसी घटनायें नारी जीवन एवं नारी समस्याओं से संबंधित विचार है । कनी एवं सादिक का प्रेम भावुकता के साथ-साथ बदलते परिवेश संबंधी विचार है ।

नासिरा शर्मा के प्रथम उपन्यास **'सात नदियां : एक समन्दर'** का मुख्य विषय ईरान के इस्लामिक क्रांति एवं आम जनजीवन पर उसका प्रभाव है ।इसमें सात सहेलियों के माध्यम से ईरान के समाज में आए बदलाव, उसके चिंतन, राजनीतिक हालात, लोगों के विद्रोह, उनका शोषण, धार्मिक कट्टरपन, महिलाओं की स्थिति एवं शोषण जैसे अनेक ज्वलंत समस्याओं का वर्णन है । इन घटनाओं में परिस्थिति अनुसार आदर्शवादी, यथार्थवादी, अतियथार्थवादी, काल्पनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आदि विचारों का समावेश है ।

'शाल्मली' उपन्यास में नासिरा शर्मा ने नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हुए पुरुष की मानसिकताओं पर प्रकाश डाला है । उपन्यास के आरंभ में शाल्मली के पति जहाँ आदर्शवादी विचारों से ओत-प्रोत है तो वहीं उपन्यास का अंत उसके दोहरे चरित्र, आत्म प्रदर्शनवादी प्रवृति एवं कुंठित विचारों से ग्रस्त दिखाया गया है । स्वयं शाल्मली आदर्शवादी विचारोंवाली होते हुए भी यथार्थवादी विचारों के अनुरूप कर्त्तव्य निभाने का अथक प्रयास करती है । उपन्यास में नारी जीवन एवं नारी समस्याओं से संबंधित विचारों की प्रधानता है ।

'ठीकरे की मंगनी' भी नारी प्रधान उपन्यास है । इसकी मुख्य पात्रा महरुख आदर्शवादी है । उसमें समाज के घृणित व्यवस्थाओं, अनाचारों और

अनैतिकताओं को नष्ट करने का विचार है । वह यथार्थवादी भी है । वह केवल भावुक प्रेम पर विश्वास नहीं करती है । उपन्यास का पात्र 'रफत' सुविधावादी एवं भोगवादी विचारधारा का है । वह महात्वाकांक्षी भी है । वह अमेरिका में 'लिव इन पार्टनर' का जीवन व्यतीत करता था ।भारत आने पर वह महरुख से शादी करना चाहता है ।किन्तु महरुख के इनकार करने पर वह एक दूसरे लड़की से शादी कर दिल्ली में रहने लगता है । उपन्यास में नारी जीवन एवं नारी से संबंधित विचारों का अनूठा समावेश है ।

'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास में देश के बंटवारे के बाद मुस्लिम परिवारों की समस्याओं का वर्णन है । उपन्यास का मुख्य पात्र निजाम जहाँ एक ओर पाकिस्तान चला जाता है, वहीं दूसरी ओर उसके परिवार के और लोग अपने पुस्तैनी गाँव को छोड़ कहीं नहीं जाना चाहते हैं । कथानक की घटनाओं में मनोवैज्ञानिक विचारों के साथ-साथ यथार्थवादी विचारों को कुशलता पूर्वक समाहित किया गया है । नासिरा शर्मा ने उपन्यास में करांची के सामाजिक ढ़ाँचे में हुए बदलाव के कारण उत्पन्न अशांति एवं उग्रवाद का कारण औद्योगिकीकरण को माना है । साथ ही भारत-पाक युद्ध के बाद बढ़ते राष्ट्रीयतापूर्ण विचारों का भी समावेश है ।

'अक्षयवट' उपन्यास में नासिरा शर्मा ने इलाहाबाद शहर के सामाजिक जीवन में आए बदलाव, पुलिस एवं प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार, पुलिस, राजनीतिज्ञ एवं अपराधियों के सामूहिक गठजोड़ के बीच आम लोगों का शोषण जैसी घटनाओं का वर्णन किया है । उपन्यास का मुख्य पात्र जहीर आदर्शवादी एवं यथार्थवादी विचारों से प्रभावित है । वह और उसके सभी दोस्त मिलकर वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में सुधार लाने के लिए अपने स्तर पर

संघर्ष करते हैं । दूसरी ओर इंस्पेक्टर त्रिपाठी एवं उसके कुछ अभिन्न शागिर्द कुत्सित विचारों वाले हैं । वे अनाचार, अत्याचार, भ्रष्ट आचरण एवं चरित्रहीनता जैसे दुर्गुणों के सहारे आम लोगों पर अत्याचार करते हैं । किन्तु नये एस॰ पी॰ सतीश मोजमदार जो एक कर्मठ एवं ईमानदार व्यक्ति है, के आने से स्थिति में काफी परिवर्तन हो जाता है । अपने सुधारवादी विचारों के कारण लोगों को न्याय दिला कर समाज में शांति स्थापित कर वह सामान्य लोगों के मन में पुलिस की छवि को बेहतर बनाने के लिए अथक प्रयास करते हैं । जहीर की दादी एवं माँ सिपतुन के वैधव्य एवं संघर्षपूर्ण जीवन का वर्णन कर लेखिका ने नारी जीवन एवं नारी समस्याओं से संबंधित विचारों को सफलता पूर्वक समाहित किया है ।

'कुइयांजान' उपन्यास में नासिरा शर्मा ने जल की समस्याओं से त्रस्त समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन कर उसके समाधान के उपाय को ढूंढ़ने का ईमानदारी पूर्वक प्रयास किया है । उपन्यास के मुख्य पात्र डा॰ कमाल आदर्शवादी, यथार्थवादी एवं पर्यावरणवादी विचारों में विश्वास रखते हैं । उनकी पत्नी समीना हर कदम पर अपने पति का साथ देती है । डा॰ कमाल के पिता जमाल खान अस्पताल बनाने के लिए जमीन दान कर उसके निर्माण में तन-मन से लग जाते हैं । इन घटनाओं से उनके उदारवादी, आदर्शवादी एवं यथार्थवादी होने का परिचय मिलता है । उपन्यास का एक पात्र बदलू जिसे मूक जानवरों से भी उतना ही प्रेम है जितना किसी एक व्यक्ति से । यह उसके मानवतावादी एवं पर्यावरणवादी विचारों का परिणाम है ।

नासिरा शर्मा के उपन्यास **'जीरो रोड'** का मुख्य पात्र सिद्धार्थ है । वह एक संघर्षशील एवं यथार्थवादी युवक है । जीवन के शुरुआती दौर में कुछ

अतिवादियों के साथ उसकी मित्रता हो गई थी । किन्तु अपने किए गए भूल के लिए उसने काफी पश्चाताप किया । उसके दुबई प्रवास में विभिन्न धर्मों एवं विभिन्न देशों के लोग उसके घनिष्ट मित्र थे । सभी मित्र आपस में एक परिवार के सदस्य जैसे रहते थे । यह उनके साम्प्रदायिक सौहार्द एवं विश्वबंधुता के विचारों को दर्शाता है । सिद्धार्थ जब अपने पिता को पैसे कमा कर भेजने लग जाता है तब उसके पिता के विचारों में परिवर्तन आने लगता है । अपने मुहल्ले में वह अपने आप को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगता है, जो उसके आत्म प्रदर्शनवादी विचारों का द्योतक है । वहीं सिद्धार्थ की माँ परम्परागत विचारों वाली महिला है । उपन्यास के पात्र रमेश शुक्ला एवं ईयाद सुलझे एवं प्रगतिशील विचारों वाले नवयुवक हैं । पात्र लाला जगतराम सामाजिक विचारों वाले एक संवेदनशील व्यक्ति हैं ।

नासिरा शर्मा के उपन्यास **'अजनबी जज़ीरा'** का केन्द्रीय विषय इराक पर विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा वर्चस्व स्थापित करने के बाद वहाँ का परिवेश है । उपन्यास की मुख्य पात्र समीरा एवं उसकी पाँचों बेटियों में राष्ट्रीय विचार की भावना है । किन्तु समीरा यथार्थवादी भी है । अपने आने वाली समस्याओं से आगाह होकर वह एक विदेशी फौजी ऑफिसर मार्क से धीरे-धीरे प्यार करने लगी । उसका प्रेम भावुकतावश नहीं था । किन्तु मार्क का प्रेम उसके कोमल भावनाओं एवं संवेदनाओं का परिणाम है । यहाँ लेखिका ने भावुक प्रेम और बदलते परिवेश संबंधी विचारों को समाहित किया है । उन्होंने यहाँ नारी जीवन एवं नारी समस्याओं से संबंधित विचारों को भी समाहित किया है ।

4.2 सामाजिक-पक्षों की तुलना

मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा दोनों उपन्यासकारों ने अपने-अपने उपन्यासों के कथा परिवेश में विभिन्न समुदायों की सामाजिक स्थिति, उनके रहन-सहन, उनके विचारों, अनुभवों एवं संघर्षों को अपने-अपने ढ़ंग से समाहित किया है । अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समाज में समान वर्ग वाले लोगों की समस्यायें, उनका अनुभव, रहन-सहन आदि में भिन्नताओं के बावजूद भी काफी समानतायें होती हैं ।

समाज के गरीब चाहे किसी भी वर्ग के हों, जीवन संघर्ष एक समान है । मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'उसका घर'** की पात्रा सोफिया ने बचपन से ही गरीबी देखी है । माँ कठोर परिश्रम कर परिवार चलाती है, बाप शराबी है । शराब पीकर देर से घर आना, उसकी माँ पर अत्याचार करना जैसे घृणित काम करता है । सोफिया का बचपन से ही शारीरिक शोषण होने लगता है । सोफिया जीवन के अनुभवों से सीख लेती हुई जॉन नामक एक बदसूरत एवं अपंग युवक से शादी कर लेती है । जीवन यापन के लिए वह एक दुकान खोल लेती है । वहीं नासिरा शर्मा के उपन्यास **'अक्षयवट'** का पात्र मुरली अनाथ है । उसके मामा- मामी उसका पालन करते हैं । उसका मामा मजदूरी कर पैसे कमाता है । सभी लोग घोर गरीबी में जीवन-यापन करते हैं । मुरली जब थोड़ा बड़ा होता है तो जीवन-यापन के लिए रेहड़ी चलाने लगता है । दोनों उपन्यासों में परिस्थितियाँ एक जैसी है । किन्तु इस अभावग्रस्त जीवन में नारी पात्र का शोषण एवं संघर्ष पुरुष पात्र से कहीं ज्यादा है । पात्र सोफिया इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

मेहरुन्निसा परवेज का उपन्यास **'अकेला पलाश'** मुस्लिम पारिवारिक परिवेश पर आधारित है । इसमें मुस्लिम समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति का वर्णन है । उपन्यास की मुख्य पात्रा तहमीना के पिता का एक दोस्त हमेशा उसके घर आता-जाता था । एक दिन मौका पाकर उसने तहमीना को अपनी हवस का शिकार बना डाला । यौवन की दहलीज पर कदम रखती तहमीना का उसी अधेड़ व्यक्ति से निकाह करवा दिया गया । तो वहीं नासिरा शर्मा के उपन्यास **'सात नदिया : एक समन्दर'** ईरान की इस्लामिक क्रांति कथा पर आधारित है । कहानी का परिवेश अलग है, किन्तु महिलाओं का शोषण एक जैसा ही है । उपन्यास की पात्र सूसन अपने पति असद से बेहद प्यार करती है, किन्तु असद उसे प्यार नहीं करता है । वह किसी दूसरे लड़की से प्यार करने लगा था । अतः उसने सूसन को तलाक दे दिया । भोली-भाली सूसन पुरूष मानसिकता से बिलकुल अनभिज्ञ थी । उसके परिवारवालों ने उसका निकाह अब्बास नामक एक अधेड़ व्यक्ति से करवा दिया । यहाँ हम पाते हैं कि परिस्थितियां एवं परिवेश भिन्न है, किन्तु मुस्लिम महिलाओं के शोषण में कोई मौलिक अन्तर नहीं है । ठीक इसी तरह मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'पासंग'** की पात्रा बानोआपा एवं कुलशुम और उपन्यास **'कोरजा'** की पात्रा रब्बो भी ऐसी ही परिस्थितियों की शिकार हो जाती है । बेमेल विवाह और उससे उत्पन्न समस्याओं को रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में उजागर किया है ।

नारी चाहे किसी भी धर्म की हो - हिन्दू या मुस्लिम । दोनों ही परिस्थियों में कामकाजी महिलाओं की समस्या एक जैसी होती है । मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'अकेला पलाश'** की पात्रा तहमीना को अपने परिवार के साथ-साथ बाहर के व्यक्तियों से भी सामना करना पड़ता है । कार्यालय के कार्य

के दौरान उसकी मुलाकातें जब एस॰ पी॰ तुषार से होती है तब तुषार तहमीना से अपना प्रेम प्रदर्शित करने लगता है । तहमीना का भी झुकाव तुषार की ओर हो जाता है । किन्तु तुषार एक चालाक पदाधिकारी है । वह भोगवादी एवं पलायनवादी है । अतः वह तहमीना का शारीरिक शोषण कर लोक-लाज और सामाजिक सम्मान के भय से पीछा छुड़ा लेता है ।

नासिरा शर्मा के उपन्यास **'ठीकरे की मंगनी'** में महरुख जब सरकारी शिक्षक बन गाँव के स्कूल में जाती है, तो वह सभी लोगों के लिए कौतूहल का विषय बन जाती है । उसके सहकर्मीगण उसे तरह-तरह से परेशान करते हैं । किन्तु महरुख की दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण ऐसे सभी लोगों की योजना असफल हो जाती है । इसी तरह उपन्यास **'शाल्मली'** की मुख्य पात्रा शाल्मली भी कामकाजी महिला है । उसे अपने पति नरेश एवं उसके परिवार के सभी लोगों से सहयोग के नाम पर निराशा ही मिलती है । वह भी घर और बाहर दोनों जगहों की समस्याओं से सामना करती है ।

4.3 राजनीतिक-पक्षों की तुलना

मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा दोनों ही उपन्यासकारों ने देश की राजनीति खासकर भारत विभाजन एवं उसके बाद मुस्लिमों की मनोदशा को अपने-अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है । हालाँकि कथा परिवेश अलग-अलग हैं, किन्तु लोगों की मनोदशा एक जैसी हीं है ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'पासंग'** में भारत विभाजन के बाद मुसलमानों के पाकिस्तान जाने का वर्णन है । चारों ओर अफरा-तफरी मची है । ऐसी परिस्थिति में उपन्यास के पात्रा जैनब दादी के पूछने पर कनी की दादी

कहती है - "पाकिस्तान जाए हमारे दुश्मन, हम क्यों जाए भला ?"[1] दादी आगे कहती है - "रातों-रात लोग अपना खानदान, अपना इतिहास सब बदल लेते हैं । बंटवारे के इस जमाने में तो नंगे और दंगाईयों की बन आई है ।"[2] जैनब दादी के यह कहने पर कि दंगे भड़कानेवाले यह कह रहे थे कि मुसलमान पाकिस्तान जाओ, अब तुम्हें यहाँ नहीं रहने देंगे । दादी कहती है कि अपना घर छोड़कर क्या कोई जीते जी पाकिस्तान जा सकता है? हड्डियों को अगर ले जाना है तो जरूर ले जायें । वह कहती है - "गुंडों को नया काम मिल गया है । सभी गुंडे देशभक्त बन गए हैं ।"[3] ठीक उसी प्रकार नासिरा शर्मा के उपन्यास **'जिन्दा मुहावरे'** में देश विभाजन के बाद बहुत से मुसलमानों के पाकिस्तान चले जाने का वर्णन है । उपन्यास का मुख्य पात्र निजाम भी ऐसे युवकों में है, जो पाकिस्तान जाने का निर्णय ले चुका है । निजाम की भाभी शमीमा कहती है कि जाओ भैया, तुम्हें बहुत गुमान है, मगर याद रखो कि एक दिन बिल्ली भी सूंघते-सूंघते पुराने ठिकाने को लौटती है । तीन साल का गोलू अपने चाचा निजाम के बारे मे जानकर कि वह जन्नत (पाकिस्तान) जा रहे हैं, घबराकर अपने दादी से पूछता है - "चचा मर गए का, दादी ?"[4] करांची पहुँचने के बाद निजाम को हकीकत का पता लगा । जो मामूली हैसियत के छोटे-छोटे लोग थे अपने को शेख, सय्यद और मजहबी रहनुमा बताकर जागीरदार बन गए ।

---

1. परवेज, मे॰ *पासंग.* पृ. 103.
2. परवेज, मे॰ *पासंग.* पृ. 104.
3. परवेज, मे॰ *पासंग.* पृ. 104.
4. शर्मा**,** ना**.** *जिन्दा मुहावरे***.** पृ**.** 11.

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'समरांगण'** में अंग्रेजों द्वारा मुगल खानदान को बेरहमी से कत्ल करने का वर्णन है । अंग्रेज सैनिकों ने दिल्ली में सरेआम कत्लेआम किया । जब अंग्रेजी साम्राज्य पूरी तरह स्थापित हो गया तो पं॰ गोपीलाल जैसे लोगों के बेईमानी, अपनों से गद्दारी, लूट-खसोट, अपनों के खिलाफ गुप्तचरी जैसे घृणित कार्यों की वजह से अंग्रेजी साम्राज्य सुदृढ़ होता गया । पुनः पृथा के भाई, डॉ॰ अहमद जैसे क्रांतिकारियों एवं कांग्रेस के सदस्यों को अंग्रेजों द्वारा फांसी पर चढ़ा देना, निर्मम हत्या कर देना, जेल में डाल देना जैसे अत्याचारों का सिलसिला शुरू कर दिया गया । ठीक उसी तरह नासिरा शर्मा के उपन्यास **'सात नदिया : एक समन्दर'** में ईरान के इस्लामिक क्रांति के बाद शाह के समर्थकों का बेरहमी से कत्ल कर दिया गया । चारों ओर भय का माहौल व्याप्त हो गया । उपन्यास की मुख्य पात्रा तय्यबा जैसी क्रांतिकारियों के साथ अत्याचार का सिलसिला शुरू हो गया । अनगिनत लोगों का कत्ल कर दिया गया एवं जेल में डालकर अमानवीय ढ़ंग से अत्याचार कर मार डाला गया ।

अतः हम पाते हैं कि परिवेश एवं कथानक में अन्तर होते हुए भी राजनीतिक पक्ष में दोनों रचनाकारों के विचारों में प्रायः एकरूपता है ।

4.4 सांस्कृतिक-पक्षों की तुलना

मनुष्य प्रगतिशील प्राणी है । वह अपनी बुद्धि, विवेक एवं संवेदनाओं से अपने परिवेश को बेहतर बनाने का प्रयास करता है । मनुष्य का ऐसा प्रयास जो उसकी जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार आदि अन्य प्राणियों से उसे अलग करता है, सभ्यता और संस्कृति कहलाती है । जहाँ सभ्यता से भौतिक क्षेत्र की उन्नति का बोध होता है, वहीं संस्कृति शब्द

से मानसिक क्षेत्र की उन्नति का पता चलता है । धर्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, कला, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रथायें सभी इसमें समाहित है । भारत में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग है । सभी धर्मों के लोगों की अलग-अलग धार्मिक संस्कृति, परम्परा एवं रिवाज है । मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा ने अपनी-अपनी रचनाओं में इन सांस्कृतिक सौन्दर्यों को समाहित किया है ।

मेहरुन्निसा परवेज ने अपने उपन्यास **'उसका घर'** में ईसाई धर्म के लोगों द्वारा मनाए जाने वाले बड़ा दिन, गुड-फ्राईडे जैसे धार्मिक त्योहारों का वर्णन कर लोगों द्वारा चर्च जाने एवं प्रार्थना करने का वर्णन किया है । **'समरांगण'** उपन्यास में उन्होंने हिंदुओं द्वारा नर्मदा नदी में स्नान एवं उसका महत्त्व, उसके किनारे लगने वाले मेले एवं धार्मिक आयोजनों का जिक्र किया है । वहाँ की सांस्कृतिक छवियों का भी उन्होंने वर्णन किया है । **'पासंग'** उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने मोहर्रम के त्योहार पर हजरत इमाम हुसैन की याद में मातमी जुलूस की चर्चा की है । मोहर्रम का त्योहार अन्याय की साजिश और अत्याचारी सत्ता के खिलाफ न्याय पाने के लिए एक युद्ध है । "यह बातिल और आदिल की जंग है ।"[1] मोहर्रम को इस्लाम में नव वर्ष माना जाता है । लेखिका ने दशहरा पर्व का भी वर्णन किया है । दशहरा की धूम-धाम से सारा नगर जगमगा जाता है । बस्तर का दशहरा एक प्रसिद्ध त्योहार है जिसकी धूम दूर-दूर तक रहती है । यह जगदलपुर का सबसे बड़ा पर्व है । सभी आदिवासी सड़कों पर आ जाते हैं । उनका उल्लास देखते ही बनता है । उनके गीतों के बोल में काँच की चूड़ियों की झनक, चांदी और गिलट के गहनों की खनखनाहट मिश्रित हँसी-ठिठोली की आवाज चारों तरफ फूट पड़ती थी । पूरे जगदलपुर में गहमा-गहमी सी मच जाती थी ।

नासिरा शर्मा के उपन्यास **'सात नदियां : एक समन्दर'** में ईद एवं मुहर्रम के जुलूसों की छवियों को अंकित किया गया है । **'अजनबी जज़ीरा'** उपन्यास में इराकियों के नौरुज का वर्णन है । अपने उपन्यास **'अक्षयवट'** एवं **'जीरो रोड'** में नासिरा शर्मा ने इलाहाबाद की सांस्कृतिक छवियों को बहुत ही कुशलता से उकेरा है । दशहरा में रामलीला का आयोजन, संगम तट पर नगर और बाहर से आये श्रद्धालुओं द्वारा अपने पितरों का श्राद्ध, बलुआ घाट के चौराहे पर स्थित शाह बाबा के मजार पर उर्स लगना, नए साल मनाने का जश्न जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम इलाहाबाद के लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है । इसके अतिरिक्त इलाहाबाद के संगम तट पर लगनेवाले कुंभ का आयोजन जो अद्वितीय होता है, का भी समावेश किया गया है । अतः हम पाते हैं कि दोनों रचनाकारों ने अपने-अपने उपन्यासों में प्रायः समान ढ़ंग से ही सांस्कृतिक पक्ष को रखा है ।

5.5 आर्थिक-पक्षों की तुलना

मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा ने अपने-अपने उपन्यासों में समाज के विभिन्न लोगों की आर्थिक स्थितियों का आकलन करते हुए उनकी वास्तविकताओं को समाहित किया है । दोनों ही उपन्यासकारों के उपन्यासों का परिवेश भिन्न है । जहाँ मेहरुन्निसा परवेज के अधिकांश उपन्यासों का कथा परिवेश बस्तर का क्षेत्र है, तो वहीं नासिरा शर्मा के उपन्यासों का कथा परिवेश इलाहाबाद, दिल्ली, ईरान, इराक एवं दुबई है । किन्तु लोगों की आर्थिक समस्या एवं उससे निजात पाने का संघर्ष प्रायः एक जैसा ही है, विशेष कर महिलाओं का ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'आँखों की दहलीज'** की पात्र जमीला आर्थिक रूप से निम्न मध्यम वर्गीय नारी है । आधुनिक परिवेश ने निश्चित ही महिलाओं को स्वाबलंबी बनाया है, किन्तु उसे नई-नई समस्याओं से भी सामना करना पड़ता है । परिवार की आर्थिक समस्याओं को सुलझाने के लिए जमीला नौकरी करती है ।

मेहरुन्निसा परवेज के दूसरे उपन्यास **'उसका घर'** का केन्द्र बिन्दु एक ईसाई परिवार है । एक ओर जहाँ सोफिया निम्न मध्यम वर्गीय ईसाई नारी का प्रतिनिधित्व करती है, वहीं दूसरी ओर उपन्यास की मुख्य पात्रा ऐलमा मध्यम वर्गीय परिवार का । आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए बचपन में सोफिया और उसकी माँ को दूसरों के घरों में जाकर घरेलू कार्य करना पड़ता था । बेशक ऐसी परिस्थितियों में सोफिया का शोषण होता है । वहीं ऐलमा के भैया एक ऑफिस में काम करते हैं । अपनी आर्थिक समस्याओं से निजात पाने के लिए सुन्दर, सुशील एवं तलाकशुदा बहन ऐलमा का शारीरिक शोषण अपने ऑफिसर के द्वारा करवाते हैं । अपने परिवार से मोहभंग के पश्चात् ऐलमा अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए मद्रास चली जाती है, वहीँ उसे नौकरी मिल गई है । **'कोरजा'** उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने मुस्लिम परिवार के जीवन संघर्ष को आधार बनाया है । इस उपन्यास में आर्थिक समस्याओं के कारण स्त्रियों के शोषण का कारुणिक वर्णन है । उपन्यास की पात्र साजो का विवाह नानी ने काफी दान-दहेज देकर किया था । किन्तु ससुराल में नहीं निभने के कारण वह अपने पति के साथ नानी के पास आ गई । कुछ सालों बाद उसके पति की मृत्यु हो गई । घर की सारी जिम्मेदारियाँ उसी के कंधों पर आ गई । किसी जमाने में नानी का परिवार काफी संपन्न था । किन्तु अब उनका सारा

खेत एवं मकान जुम्मन के पास गिरवी पड़ा था । जुम्मन कभी उनके यहाँ मुनीम हुआ करता था । साजो उसकी गोद में खेलकर बड़ी हुई थी । किन्तु अब अपने परिवार वालों के सिर पर छत बनाए रखने के लिए उसे हर रात जुम्मन की हवस का शिकार बनना पड़ता था । मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'अकेला पलाश'** में भी आर्थिक रुप से तंग महिलाओं को शारीरिक शोषण का शिकार होना पड़ता है । किन्तु इस तरह की समान परिस्थितियों में पुरुषों की स्थिति महिलाओं से काफी बेहतर है । उपन्यास का पात्र विपुल गरीब परिवार का नवयुवक है । वह पढ़ा लिखा एवं समझदार है । बेरोजगारी की समस्या ने उसे संघर्षशील बना दिया है । वह आर्थिक समस्याओं से परेशान है । माँ के गहने गिरवी रखकर वह इन्टरव्यू देता है, किन्तु निराशा ही हाथ लगती है । आर्थिक समस्याओं से निजात पाने के लिए वह हर छोटा मोटा काम करता है ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'समरांगण'** का पात्र पं॰ गोपीलाल जब अपने पत्नी के साथ रायपुर पहुँचा तो उसके पास कुछ भी नहीं था । खाने तक के लिए पैसे नहीं थे । किन्तु मिट्ठू सिंहजी की सहायता से वह अंग्रेजी छावनी में सब्जी पहुँचाने का काम कर अपनी बुद्धिमानी से काफी संपन्न हो गया । वहीं एक अन्य पात्र लटार्या एक गरीब परिवार का नवयुवक है । आर्थिक तंगी से उबरने के लिए वह सेठ तोतामल के यहाँ नौकरी करता है । वह भोली-भाली सेठानी को अपने वश में कर लेता है । सेठानी के आत्महत्या कर लेने के बाद अपने छल कपट एवं स्वार्थ के वशीभूत होकर वह दूसरों को ठगने का धंधा करने लगा । उपन्यास **'पासंग'** की पात्रा बुलाकी बेगम काफी संपन्न परिवार से थी । किन्तु समय के प्रवाह ने उन्हें अभावग्रस्त बना दिया था । फिर भी इज्जत के साथ जीने के लिए उनके पास पर्याप्त खेत एवं जमीन थी । अपनी

कुशल एवं व्यावहारिक बुद्धि के कारण वह किसी तरह से अपनी आर्थिक समस्याओं का समाधान कर लेती थी । उनके बटाईदार हमेशा उनसे झूठ बोलकर उन्हें ठगने का काम करते थे ।

नासिरा शर्मा के उपन्यास **'सात नदियां : एक समन्दर'** एवं **'अजनबी जज़ीरा'** में क्रमशः ईरान और इराक में आर्थिक समस्याओं से जूझती हुई महिलाओं का वर्णन है । **'सात नदियां : एक समन्दर'** के कथानक में इस्लामिक क्रांति के बाद लोगों के रोजगार बंद हो गए । कामकाजी स्त्रियों पर प्रतिबंध लग गए । ऐसी विषम परिस्थितियों में खासकर विधवा औरतों की समस्या विकराल हो गई । घर का कीमती सामान बेचकर कुछ दिनों तक जीवन निर्वाह किया, उसके बाद उनके जीवन में अंधेरे के सिवा और कुछ नहीं बचा था । उपन्यास के पात्र प्रसिद्ध संतूर वादक हबीब अपनी पेट की आग बुझाने के लिए पेरिस में संतूर बजाकर लोगों का मनोरंजन कर पैसे कमा रहा था । ईरानी लड़कियाँ वेश्या बनने को मजबूर थी । "जो पैसे वाले थे, उनके तहखाने पैसों से भरे थे ।"[1] उनके घरों में सभी सुख-सुविधायें उपलब्ध थी । वे लोग आराम से जीवन बसर कर रहे थे । किन्तु मध्यम और निम्न वर्ग हालातों की चक्की में पिस रहा था । **'अजनबी जजीरा'** की मुख्य पात्रा समीरा भी इराक के बदले परिवेश में कठिन संघर्ष कर किसी तरह स्वयं और अपनी बेटियों को हर पल आने वाले खतरों से बचाने के लिए प्रयत्नशील है । नासिरा शर्मा के उपन्यास **'शाल्मली'** की पात्रा शाल्मली मध्यम वर्गीय परिवार की है । बिना दहेज लिए नरेश उससे शादी करता है । किन्तु बाद में नरेश की संगत गलत

---

1. शर्मा, ना. *सात नदिया : एक समन्दर*. पृ. 150.

लोगों से हो जाती है । दोस्तों के साथ मिलकर शराब पीना, परस्त्री गमन जैसे दुर्गुण उसमें आ जाते हैं । वह अपना पूरा वेतन इन्हीं सब कामों में बर्बाद कर देता है । शाल्मली जो एक प्रशासनिक पदाधिकारी है, काफी मुश्किल से घर की आर्थिक समस्याओं का निवारण करती है । **'ठीकरे की मंगनी'** उपन्यास की मुख्य पात्रा महरुख जब नौकरी के लिए गाँव जाती है तब वह गाँव के लोगों की आर्थिक समस्याओं को देखकर दुःखी हो जाती है । वह लछमनियाँ जैसी औरतों और गरीब बच्चों की यथासंभव सहायता करने का प्रयास करती है । **'जिन्दा मुहावरे'** उपन्यास में नासिरा शर्मा ने भारत विभाजन के बाद लोगों के पलायन और उसके बाद उनकी आर्थिक स्थितियों का वर्णन किया है । मुख्य पात्र निजाम का परिवार काफी संपन्न था । किन्तु उसके करांची पहुँचने पर उसके पास कुछ भी नहीं था । वह कई रात फुटपाथ पर सोया । उसने मजदूरी से लेकर रेहड़ी लगाने तक का काम किया । काफी परिश्रम के बाद उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई । **'जीरो रोड'** उपन्यास में नासिरा शर्मा ने दुबई में नौकरी करने गए लोगों की आर्थिक स्थितियों का वर्णन किया है । भारतीय महाद्वीप से गए मजदूरों को "४० फीट लंबे ७.४ फीट चौड़े और ८ फीट ऊँचे"[1] कंटेनरों को दो हिस्से करके हर हिस्से में ८ लोगों को रहना पड़ता है । इन लोगों की जिन्दगी कठिन है । वहीं अफगानिस्तान जैसे देशों में जहाँ युद्ध के कारण हजारों महिलायें विधवा हो जाती है, अपने परिवार एवं बच्चों के भरण-पोषण के लिए टुरिस्ट वीजा पर दुबई आकर होटलों में जिस्म-फरोशी से पैसे कमा कर तीन महीने के बाद लौट जाती है । नासिरा शर्मा का उपन्यास **'अक्षयवट'** के मुख्य पात्र जहीर का जब विश्वविद्यालय के परीक्षा से रेस्टिकेशन हो जाता है तब वह

---

1. शर्मा, ना. *जीरो रोड.* पृ. 32.

अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए दुकानदारी करता है । अपने द्वारा उपार्जित पैसों से वह दूसरों की समस्याओं का भी समाधान करता है । उपन्यास **'कुइयांजान'** के पात्र डा॰ कमाल असहाय एवं वृद्ध लोगों के ईलाज के लिए अस्पताल खोलना चाहते हैं । किन्तु पैसे की कमी के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा है । उनकी पत्नी समीना उनके सपने को पूरा करने के लिए नौकरी करने लग जाती है । अंततः पिता जमाल खाँ के सहयोग से अस्पताल का निर्माण कार्य आरंभ हो पाता है ।

अतः हम पाते हैं कि समाज के विभिन्न वर्गों में आर्थिक समस्यायें व्याप्त है । किन्तु हिंदी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में आर्थिक समस्याओं से जूझने का वर्णन प्रायः एक समान है ।

4.6 मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समानता

किसी भी उपन्यास की लोकप्रियता का प्रमुख भाग उसका विषय वस्तु है । मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा ने भिन्न-भिन्न विषय वस्तुओं को केन्द्रीय विषय बनाकर उपन्यासों की रचना की है । अध्ययन से पता लगता है कि इनके विषय वस्तुओं में काफी समानतायें हैं ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'आँखों की दहलीज'**, **'उसका घर'**, **'अकेला पलाश'** एवं **'कोरजा'** में जहाँ नारी के जीवन और उसकी समस्याओं को केन्द्र में रखकर रचना की गई है , वहीं दूसरी ओर नासिरा शर्मा के उपन्यास **'सात नदियां : एक समन्दर'**, **'शाल्मली'**, **'ठीकरे की मंगनी'** एवं **'अजनबी जज़ीरा'** भी उन्हीं समस्याओं पर केन्द्रित है । **'सात नदिया : एक समन्दर'** एवं **'अजनबी जज़ीरा'** का कथा परिवेश क्रमशः ईरान एवं इराक का है किन्तु **'शाल्मली'** और **'ठीकरे की मंगनी'** का कथा परिवेश भारतीय संदर्भ में है ।

मेहरुन्निसा परवेज के सभी उपन्यासों का कथा परिवेश भारतीय संदर्भ में है । कथा परिवेश में अंतर रहने के बावजूद भी स्त्रियों की स्थिति, उनकी संवेदनशीलता एवं उनकी समस्याओं में एकरूपता है ।

'आँखों की दहलीज' में तालिया विवाहित होने के बावजूद संतानोत्पति के लिए जावेद से संबंध स्थापित करती है । ठीक उसी तरह **'अजनबी जज़ीरा'** में अपनी संतान की भविष्य को सुरक्षित करने के लिए समीरा एक विदेशी फौजी ऑफिसर मार्क से शादी कर लेती है । यहाँ दोनों पात्रों तालिया एवं समीरा का उदेश्य वस्तुतः एक ही है - संतान एवं संतान का सुरक्षित भविष्य । **'आँखों की दहलीज'** में तालिया की माँ इसके लिए अनुमति देती है, तो दूसरी ओर **'अजनबी जज़ीरा'** में समीरा की चची उसे अनुमति देते हुए कहती है - " फौरन कबूल कर लो ।"[1]

'उसका घर' उपन्यास की मुख्य पात्रा ऐलमा अपने परिवार के सदस्यों के मनोभावों को जानकर आहत हो जाती है एवं मद्रास जाकर नौकरी करने का निर्णय लेती है । वहाँ उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व होगा, अपना घर होगा । ठीक उसी तरह नासिरा शर्मा के उपन्यास **'ठीकरे की मंगनी'** में मुख्य पात्रा महरुख का दिल उसके मंगेतर से टूट जाता है । वह अपना परिवार छोड़ गाँव के एक सरकारी स्कूल में अध्यापिका बन जाती है । अवकाश प्राप्त करने के बाद वह अपने घर जाती है, किन्तु घर के बदले माहौल को देख पुनः वह वापस गाँव आ जाती है । उसकी देखभाल करने वाली लछमनियाँ कहती है कि वह जानती थी कि दीदी एक दिन जरुर लौट आएगी । यहाँ उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है,

---

1. शर्मा, ना. *अजनबी जजीरा* . पृ. 85

अपना घर है । महरूख कहती है कि यहाँ कि मिट्टी, हवा, पानी और यह जमीन उसकी पहचान है ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'अकेला पलाश'** की मुख्य पात्रा तहमीना की शादी अधेड़ उम्र के व्यक्ति जमशेद से हो जाती है । इस बेमेल शादी के बाद भी तहमीना पूरी निष्ठा से पारिवारिक जीवन जीने का प्रयास करती है । गृहस्थी चलाने में उसके पति जमशेद का कोई सहयोग नहीं मिलता है । फलतः दोनों के बीच वैचारिक अन्तर है । किन्तु अपने सकारात्मक विचारों के कारण तहमीना सामाजिक कार्यों से जुड़ जाती है । वह चेयरमैन बन जाती है एवं अपने कर्त्तव्यों का पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से निर्वहन करती है । उसी तरह नासिरा शर्मा के उपन्यास **'शाल्मली'** में उपन्यास की पात्रा शाल्मली का विवाह नरेश से होता है । आरंभ में नरेश आदर्शवादी लगता है, किन्तु बाद में वह कुंठित हो जाता है । गलत लोगों के साथ रहकर वह बहुत सारे दुर्गुणों का शिकार हो जाता है । शाल्मली एक प्रशासनिक अधिकारी बन जाती है । दोनों के बीच आपसी सामंजस्य का अभाव है । गृहस्थी चलाने में नरेश का बिलकुल सहयोग नहीं रहता है । फिर भी अपने सकारात्मक विचारों के कारण शाल्मली अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करती है ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'पासंग'** की मुख्य पात्रा कनी है । बचपन में ही उसके पिता की मृत्यु हो गई । माँ का निकाह दूसरे व्यक्ति से हो गया । ऐसी विषम परिस्थितियों में उसकी विधवा दादी अकेले ही उसकी परवरिश करती है । घर में कोई पुरुष सदस्य नहीं है । कनी की दादी बुलाकी बेगम का व्यक्तित्व काफी विशाल है । पारिवारिक अनुशासन बनाए रखने के लिए वह काफी सख्त है । वह अनुशासनप्रिय महिला है । कनी को वह माँ एवं

पिता दोनों का प्यार देती है एवं उसके पढ़ाई की भी व्यवस्था करती है । वह कनी में उच्च विचारों एवं नैतिक मूल्यों के प्रति रूझान जगाती है । कनी पितृहीन बालिका है । अतः जीवन के बहुत सारे कटु अनुभवों को वह स्वयं झेलती है । ठीक उसी तरह नासिरा शर्मा के उपन्यास **'अक्षयवट'** का मुख्य पात्र जहीर की स्थिति है । जहीर का भी लालन- पालन उसकी दादी की देख-रेख में ही होता है । जहीर भी पितृहीन बालक है । उसकी दादी फिरोजजहाँ भी अनुशासनप्रिय और यथार्थवादी महिला है । वह भी जहीर में उच्च आदर्श एवं नैतिक मूल्यों के प्रति रूझान जगाती है एवं शिक्षा-दीक्षा की भी समुचित व्यवस्था करती है । जीवन के संघर्ष और कटु अनुभवों से जहीर को स्वयं जूझना पड़ता है ।

मेहरुन्निसा परवेज का उपन्यास **'समरांगण'** ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में लिखा गया है । कथा परिवेश १८५७ ई॰ के आसपास का है । उपन्यास में राष्ट्र प्रेम की भावना का विचार है । इसका मुख्य पात्र पं॰ गोपीलाल आरंभ में नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों पर चलने वाला व्यक्ति प्रतीत होता है । किन्तु मौका मिलते ही वह अपने सारे मूल्यों की तिलांजलि देकर अपनी वासना एवं सुख समृद्धि में लिप्त हो जाता है । अंग्रेजों की चाटुकारिता कर वह समाज में उच्च स्थान हासिल करता है । एक भद्र पुरूष मिट्ठू सिंहजी, जो गोपीलाल को आश्रय देते हैं एवं अपनी आलीशान कोठी गोपीलाल के नाम कर देते हैं, के साथ विश्वासघात करता है । देश एवं समाज के प्रति प्रेम रखने वालों को वह मूर्ख समझता है । उपन्यास के अंत में जब गोपीलाल के बेटे मोहनलाल के धोखे में ब्रिटिश सैनिक उसके दोस्त अमर को मार देते है, तब गोपीलाल को अहसास होता है कि युद्ध और राजनीति में कुछ भी गलत नहीं माना जाता है । उसे

ऐसा लगा जैसे अमर का खून नहीं होकर उसके बेटे का खून हुआ है । जिस ब्रिटिश शासन को आगे बढ़ाने में उन्होंने अपना दिन-रात एक कर शरीर के खून की एक-एक बूंद तक न्योछावर कर दी, वही ब्रिटिश शासन साजिश के तहत उसका अंत करना चाहता है । ठीक उसी तरह नासिरा शर्मा के उपन्यास **'सात नदिया** : **एक समन्दर'** ईरान की इस्लामिक क्रांति पर आधारित एक ऐतिहासिक उपन्यास है । इसकी प्रमुख पात्रा तय्यबा आदर्शवादी एवं मानवीय गुणों का सम्मान करने वाली युवती है । उसे अपने देश एवं समाज से बहुत प्यार है । वह अपने देश के लिए अपनी आहुति दे डालती है । किन्तु बहुत सारे ऐसे पात्र हैं जो अपने विचारों एवं मूल्यों को बदलकर वर्तमान परिवेश में जीना पसंद करते हैं । वे शाह के शासनकाल में जिन पदों पर थे, इस्लामिक क्रांति के बाद भी वे उन्हीं पदों पर बने रहे । ऐसे लोग सही मायने में देश एवं समाज के लिए त्याग करने वालों को मूर्ख समझते हैं । लेखिका ने एक सीधी-सादी महिला पात्र जिसका राजनीति से कोई लेना देना नहीं था, के द्वारा कहती हैं कि भले ही मैं सियासत के दाव पेंच नहीं जानती मगर यह जरूर समझ गई हूँ कि सयासत बेगुनाहों के शिकार का नाम है । यह एक ऐसे जहर का नाम है जो जिन्दगी का स्वाद नहीं देता बल्कि लोगों को मौत की नींद सुला देता है ।

अतः हम पाते हैं कि समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा के उपन्यासों में काफी समानतायें है ।

4.5 मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा के उपन्यासों में असमानता

एक ओर जहाँ मेहरुन्निसा परवेज द्वारा कुल छः उपन्यासों की रचना की गई है, वहीं दूसरी ओर नासिरा शर्मा द्वारा कुल दस उपन्यासों की रचना की गई है । मेहरुन्निसा परवेज के प्रायः सभी उपन्यासों का कथा परिवेश

छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र है, जिसमें वहाँ के लोगों का रहन-सहन, आम बोल-चाल की भाषा, जीविका के लिए लोगों का संघर्ष, आदिवासियों की सरल जीवन-शैली, मुस्लिम समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति एवं उनका शोषण आदि जैसे विषयों का वर्णन है ।उपन्यास **'समरांगण'** को छोड़कर इनके सभी उपन्यास स्त्री प्रधान उपन्यास है । वहीं दूसरी ओर नासिरा शर्मा के उपन्यासों का कथा-परिवेश व्यापक है । उनके द्वारा रचित विभिन्न उपन्यासों में कथा-परिवेश अलग-अलग है, जैसे- **'सात नदियां : एक समन्दर'** में ईरान की इस्लामिक क्रांति की पृष्ठभूमि है, वहीं **'अजनबी जजीरा'** में इराक पर अमरीकी सेनाओं द्वारा किए गए अत्याचारों से समाज में उत्पन्न समस्याओं का । **'ठीकरे की मंगनी'** में जहाँ एक ओर भारतीय मुस्लिम समाज के औरतों का जीवन संघर्ष एवं सामाजिक परिवेश का वर्णन है तो वहीं दूसरी ओर 'शाल्मली' में महानगर दिल्ली में पढ़ी-लिखी एक हिन्दू महिला का जीवन संघर्ष एवं उसका सामाजिक परिवेश । एक ओर जहाँ **'जिन्दा मुहावरे'** का कथा-परिवेश भारत-पाकिस्तान विभाजन एवं भारतीय समाज पर उसका व्यापक असर है तो दूसरी ओर **'पारिजात'** में एक उच्च शिक्षित भारतीय नवयुवक का खाड़ी के देशों में अपने अस्तित्व को बचाने का संघर्ष । **'अक्षयवट'** में जहाँ एक ओर इलाहाबाद शहर में व्याप्त समस्याओं एवं उसके समाधान के लिए कुछ समर्पित नवयुवकों का सामाजिक परिवेश का वर्णन है तो वहीं दूसरी ओर **'कुंइयांजान'** में पानी की समस्याओं से त्रस्त आमलोग एवं इन समस्याओं के समाधान के लिए जनसामान्य को जागरुक करते हुए एक समर्पित नवयुवक डॉक्टर । नासिरा शर्मा के उपन्यासों में **'सात नदियां : एक समन्दर'**, **'शाल्मली'**, **'ठीकरे की मंगनी'** एवं **'अजनबी जजीरा'** स्त्री प्रधान उपन्यास है ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास की नायिका जहाँ परिस्थितियों के आगे घुटने टेक कर अपने अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर लेती है तो वहीं दूसरी ओर नासिरा शर्मा के उपन्यासों की नायिका परिस्थितियों की विषमताओं को समझ कर उसके आगे सिर न झुका कर अपना एक स्वतन्त्र निर्णय लेकर मिसाल कायम करती है । वह समाज के नियमों को अनदेखा न करते हुए भी अपने जीवन में संघर्ष को प्राथमिकता देती हुई विजय प्राप्त करती नजर आती है । जैसे- मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'आँखों की दहलीज'** की नायिका तालिया जहाँ संतान प्राप्ति की चाह में चारित्रिक पतन की शिकार हो जाती है । जब उसे अपनी इस गलती का एहसास होता है तो वह आत्म-ग्लानि से ग्रसित होकर जीवन से पलायन कर जाती है । **'उसका घर'** की नायिका ऐलमा की प्रवृति भी भीरू है, वह अपने साथ होने वाले अन्यायों का प्रतिकार नहीं कर पाती है । अपनी स्थिति को स्वीकार कर वह अपने भाई के ऑफिसर द्वारा शारीरिक शोषण का शिकार होती रहती है । **'अकेला पलाश'** की नायिका तहमीना अपने पिता की उम्र के पुरूष द्वारा शारीरिक शोषण के उपरांत उसकी पत्नी बनकर जीवन-यापन करती है । कालांतर में एक संस्था की चेयरमैन के रूप में वह एस॰ पी॰ तुषार की तरफ आकर्षित होकर उसकी कुत्सित भावनाओं का शिकार हो जाती है । उसे अपने दुःखद दाम्पत्य जीवन में तुषार से आशा की किरण नजर आती है । परन्तु तुषार उसके लिए छलावा सिद्ध होता है । तहमीना अपने बिखरे हुए वजूद और आत्म-सम्मान को संभाल कर पुनः प्रतिष्ठित होती है । वह अब एक दृढ़, आत्मविश्वासी एवं सुलझे हुए व्यक्तित्व की मालकिन बनकर समाज में मिसाल कायम करती है । उपन्यास **'समरांगण'** का पात्र सेठ तोतामल की पत्नी माधवी संतान प्राप्ति की आशा में सेठ के एक जवान रिश्तेदार लटार्या की ओर आकर्षित हो जाती है । उसका लटार्या से

प्रगाढ़ प्रेम सम्बन्ध था । उसने लटार्या के पुत्र को जन्म दिया, पर लटार्या की बढ़ती महात्वाकांक्षा को वह संतुलित नहीं कर पाई । लटार्या द्वारा विवाह करने के निर्णय को वह किसी भी प्रकार जब बदल न सकी तो उसने अपने पुत्र सहित आत्म हत्या का मार्ग चुन लिया ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में जो मुख्य स्त्री पात्र है वे कहीं न कहीं निर्णय लेने में असमंजस की स्थिति में रहती हैं, वे परिस्थितियों के आगे आत्म-समर्पण कर समय और नियति के हाथों की कठपुतली बन जाती है । वे हालात का मुकाबला न कर पलायनवादिता को अपनाती नजर आती है ।तो वहीं दूसरी ओर नासिरा शर्मा के उपन्यासों की नायिका उसी परिस्थिति में अपने निर्णय एवं आचरण के द्वारा अपने संपूर्ण जीवन और व्यक्तित्व को बदलने में सक्षम साबित होती है ।

नासिरा शर्मा के उपन्यास **'शाल्मली'** की नायिका शाल्मली और मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'अकेला पलाश'** की नायिका तहमीना दोनों की स्थिति कमोवेश एक जैसी है । दोनों ही अपने विवाहित जीवन में उपेक्षित हैं । जहाँ तहमीना प्रेम और आत्मीयता की तलाश में भटकाव का शिकार बन जाती है तो वहीं शाल्मली नरेश से उदासीनता पाकर अपने आप को बेहद सीमित कर लेती है । वह परिवार एवं समाज में अपनी प्रतिष्ठा को कायम रखते हुए नरेश के साथ एक घर में रहते हुए एक विच्छेदित विवाहित जीवन जीती है । वह एक प्रशासनिक पदाधिकारी थी, उसके समक्ष तलाक और पुनर्विवाह के विकल्प मौजूद थे परन्तु उसने किसी भी तरह की विश्रृंखलता को प्रोत्साहन न देकर संयमित जीवन जीने का निर्णय लिया । शाल्मली ने स्त्री जीवन के उच्च आदर्शों को हमारे सामने रखा है । तो वहीं दूसरी ओर तहमीना एक कुशाग्र

बुद्धि, संयमी, संतुलित व्यक्तित्व की मालकिन होते हुए भी तुषार के द्वारा बहका ली जाती है । एक वंचित सुख के प्रलोभन को वह अनदेखा नहीं कर पाती । तुषार के साथ सुखी विवाहित जीवन के सपने देखते हुए उसके धोखे का शिकार हो जाती है । तुषार ने अपनी आदिम जरूरतों को पूरा करने के लिए तहमीना का इस्तेमाल किया था । जब तहमीना उसके प्रेम में पूरी तरह डूबकर विवाह करने को व्याकुल थी तब तुषार तबादला कराकर भाग खड़ा हुआ । इस स्थिति में तहमीना को आत्म ज्ञान हुआ और उसने अपने अतीत को भुलाकर साहसी, कर्तव्यनिष्ठ और एक प्रतिष्ठित महिला के रूप में खुद को व्यवस्थित कर अपने जीवन को पूर्णता दी ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'उसका घर'** की नायिका ऐलमा और नासिरा शर्मा के उपन्यास **'ठीकरे की मंगनी'** की नायिका महरूख दोनों ही पति या मंगेतर द्वारा खंडित की गई है । एक ओर जहाँ ऐलमा का पति विवाह के प्रारंभिक दिनों में ही उसे तलाक दे देता है तो वहीं दूसरी ओर महरूख है जिसकी बचपन में ही शादी तय कर दी गई थी । मंगेतर के विश्वासघात ने महरूख के हृदय को छलनी कर दिया और उसने आजीवन विवाह न करने का निर्णय लेते हुए छोटे से गाँव में शिक्षण करते हुए अपना पूरा जीवन बिता दिया । उसने ग्राम-वासियों के जीवन स्तर को सुधारने एवं उनके विकास के लिए अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा लगा दी । उसने अपने मंगेतर रफत के विश्वासघात को कभी भी क्षमा न करते हुए उसके बार-बार के विवाह प्रस्ताव को ठुकरा कर अपने जीवन की बागडोर को अपने हाथों में थाम कर रखा । यह मुस्लिम समाज की पहली घटना थी कि किसी स्त्री ने पुरुष की चरित्रहीनता के लिए उसका बहिष्कार कर दिया हो । वहीं दूसरी ओर ऐलमा एक स्कूल में शिक्षिका

होते हुए भी अपने बड़े भाई की महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के क्रम में अपमानित होती रही है । आहूजा और उसके सम्बन्ध शहर में चर्चा का विषय है । ऐलमा बिल्कुल असहाय और दयनीय स्थिति में शोषित होने को विवश है । वह अपने भाई के द्वारा प्रत्यारोपित पुरूष आहूजा का विरोध न कर दमन-चक्र में पिसती रहती है ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'कोरजा'** की स्त्री पात्रा साजो खाला अपने ही गिरवी पड़े घर में रहने देने के एवज में कभी उनका मुनीम रह चुका विधुर जुम्मन की शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति करने की शर्त मानने को बाध्य है । वह घर टूटे-बिखरे हुए लोगों की शरणस्थली था । वहीं दूसरी ओर नासिरा शर्मा के उपन्यास **'अजनबी जजीरा'** की नायिका समीरा मार्क के प्रणय निवेदन को लगातार अस्वीकार करती रहती है । वह अपनी पति की मौत के बाद अपनी पाँच बेटियों के साथ बेहद कठिनाईयों के साथ जीवन यापन करती है । इराक की इस स्थिति में जहाँ इराकी महिलायें जिस्म-फरोशी को अपनी नियति मान लेती है, वहीं समीरा की वतन-परस्ती और मरे हुए शौहर के प्रति प्रेम ने मार्क के हृदय में उसकी ऐसी जगह बना दी थी कि वह न केवल गुप्त रूप से उसकी एवं उसके परिवार की रक्षा ही करता था बल्कि उसने समीरा से शादी कर उसे एवं उसकी बेटियों को इराक के असुरक्षित माहौल से बाहर भी निकाला था ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास **'समरांगण'** और नासिरा शर्मा के **'सात नदियां : एक समन्दर'** में आन्दोलनों का जिक्र है । जहाँ **'समरांगण'** में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति की घटना का जिक्र है तो वहीं **'सात नदियां : एक समन्दर'** में ईरान की क्रांति का । **'समरांगण'** की स्त्री पात्रा सुहासिनी जहाँ अपने पति

गोपीलाल को अंग्रेजों का साथ देता देखकर भी चुप्पी लगाए रहती है तो दूसरी ओर **'सात नदियां : एक समन्दर'** की नायिका तय्यबा ईरान की क्रांति में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती है । वह अपने आचरण से ईरान के इतिहास को बदलने का प्रयास करती है । इस क्रम में उसे पीड़ा, मार, अपमान एवं बलात्कार भी झेलने पड़ते हैं । सुहासिनी जहाँ गुमनाम मृत्यु को गले लगाती है तो वहीं तय्यबा एक सैनिक की भाँति लड़ते हुए शहीद हो जाती है ।

अतः हम पाते हैं कि समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समान परिस्थितियों के होते हुए भी उनके पात्रों के निर्णय, आचरण एवं व्यवहार में काफी असमानतायें है ।

4.7 संदर्भ ग्रंथ-सूची

उपन्यास

परवेज, मेहरुन्निसा (१९६९). *आँखों की दहलीज.* अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९७२). *उसका घर.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९७७). *कोरजा*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९८१). *अकेला पलाश*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (२००२). *समरांगण*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (२००४). *पासंग*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८४). *सात नदिया*: *एक समन्दर*. अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८७). *शाल्मली*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८७). *ठीकरे की मंगनी*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९९३). *जिन्दा मुहावरे*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००३). *अक्षयवट*. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००५). *कुंइयाजान*. सामयिक प्रकाशन,. नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००८). *जीरो रोड*. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२०११). *पारिजात*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२०१२). *अजनबी जजीरा*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

शर्मा, नासिरा (२०१४). *कागज की नाव* . किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

आलोचनात्मक ग्रंथ / संदर्भ ग्रन्थ

उतकर, ना. (2002*). स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य और साहित्यकार.* चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर.

कर्दम, ज. (2006). *इक्कीसवीं सदी में दलित आंदोलन.* साहित्य संस्थान प्रकाशन, गाजियाबाद.

खान, एम. फि. (2012). *साहित्य के आईने में मुस्लिम विमर्श.* वांग्मय प्रकाशन, अलीगढ़.

चव्हाण, अ. (2012) *समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष* . वाणी प्रकाशन, दरयागंज, नई दिल्ली.

त्रिपाठी, स. (2000). *हिन्दी उपन्यास* : *समकालीन विमर्श.* अमन प्रकाशन, कानपुर.

मोहनन, एन. (2013). *समकालीन हिन्दी साहित्य.* वाणी प्रकाशन, दरयागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.

राय, र. (2014). *हिन्दू-मुस्लिम रिश्तों के बहाने.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण.

सिंह, पु. (1986). *समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.

******